Website: https://hgbsgujarat.org

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात

तंत्री एवं प्रधान संपादक
विजयकुमार छत्रपाल शर्मा (चोरीवाड-ईडर)

• Email - guj.abhgb@gmail.com
• वर्ष : 1 • अंक : 05 • 15 अक्टूबर, 2023, रविवार

सहतंत्री
• कमलेश शर्मा (पनवाडिया-थोलाईवाले), • रामअवतार एम.शर्मा (कुडाया), अहमदाबाद, • हितेश शर्मा, सिद्धपुर

दिवाली के शुभ मुहूर्त

नई खातावही खरीदने और पंजीकरण कराने का शुभ समय

1. रविवार, दिनांक 03-11-2023
   प्रातः 6.43 बजे से प्रातः 10.55 बजे तक
   दोपहर 12.25 बजे से 13.49 बजे तक
   शाम 17.32 बजे से 18.25 बजे तक
2. शनिवार दिनांक 04-11-2023
   दोपहर 12.20 बजे से 16.39 बजे तक
   शाम 18.03 बजे से 19.33 बजे तक
3. रविवार दिनांक 05-11-2023
   पुष्य नक्षत्र 10.27 बजे तक ही है
   सुबह 8.15 बजे से 10.27 बजे तक

धनतेरस पर्व, धनवंतरी पूजन, लक्ष्मीपूजा-कुबेर पूजा का शुभमुहूर्त

रविवार दिनांक 10-11-2023
- सुबह 6.42 बजे से 10.56 बजे तक
- दोपहर 12.05 बजे से 13.43 बजे तक
- शाम 17.37 बजे से 18.21 बजे तक
- रात 21.20 बजे से 22.58 बजे तक

काली चौदस-नरक चतुर्दशी-महाकालीपूजा-यंत्रपूजा-हनुमानजी पूजा-भैरव पूजा का शुभमुहूर्त

शनिवार 11-11-2023
- रात 23.42 बजे से 24.34 बजे तक

दिपावली-दिवाली पर्व, व्यापार खातावही पूजा, सरस्वती-लक्ष्मी पूजा का शुभमुहूर्त

रविवार दिनांक 12-11-2023
- सुबह 9.35 बजे से 12.22 बजे तक
- दोपहर 13.48 बजे से 15.12 बजे तक
- शाम 17.53 बजे से 22.48 बजे तक

नूतन वर्ष, विक्रम सं 2080, धंधा,व्यापार या व्यवसाय शुभारंभ के मुहूर्त

मंगलवार दिनांक 14-11-2023
- सुबह 8.35 से दोपहर 13.49 बजे तक
- गोवर्धन पूजा के लिए

भाई-दूज - भाई बीज - यम द्वितीया

- दोपहर 1.10 बजे से 03.19 बजे तक

शुभ

लाभपंचमी या ज्ञानपंचमी के शुभमुहूर्त

शनिवार दिनांक 18-11-2023
- सुबह 8.22 बजे से 9.41 बजे तक

लाभ

(लेखक विराग शर्मा - सोमनाथ संस्कृत युनि. से बीए(शास्त्री) डीग्री प्राप्त एवं कर्मकांड के जानकार है)

समाज चिंतन - आज हम कहा हैं?

समाज में लगातार संघर्ष की स्थिति, पारिवारिक हिंसा, संपत्ति विवाद और टूटते घर बेहद चिंताजनक

सामाजिक टास्क फोर्स का गठन , प्रदेश महिला टीम का गठन करना जरुरी

बुद्धिजीवीयोने समाज से बनाई है दूरी, एकदूसरे को नीचा दिखाने होड समाज सुधार में लाएगी बाधा

भारत के विभिन्न राज्यों में रहने वाला हमारा हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समुदाय आर्थिक रूप से समृद्ध, बहुत संघर्षशील और रूढ़िवादी रहा है। समुदाय की समृद्ध विरासत और पौराणिक इतिहास के बारे में कोई गहन जानकारी नहीं है। इसलिए मैं समाज की पृष्ठभूमि के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कह सकता, लेकिन आज मैं समाज के सभी लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। दोस्तो..आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसके बारे में किसी ने बिल्कुल सही कहा है, 'आज हमारी इमारतें तो अच्छी हैं, लेकिन घर टूट रहे हैं। घर में पति-पत्नी दोनों कमा रहे हैं, लेकिन तलाक के मामले बढ़ रहे हैं। हम चांद पर पहुंच गए हैं, लेकिन सड़क पार करना और नए पड़ोसी से बात करना मुश्किल है। बिजनेस में मुनाफा हो रहा है, लेकिन रिश्ते खोखले होते जा रहे हैं। कुल मिलाकर हमारे पास दिखाने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन मन में पवित्र विचार, पवित्र आत्मा कम होती जा रही है। इस दुनिया में संसाधनों की नहीं, बल्कि मानवता की कमी है। सच्ची मानवता को सफलता का महत्व, सफलता की सही परिभाषा समझनी होगी। हम सभी के मन में यह बात होती है कि अगर हम पैसा कमाएंगे या कोई बड़ा उद्योग चलाएंगे तो हम सफल होंगे। यह सफलता नहीं है, यह प्रगति है, प्रगति और सफलता के बीच बहुत बड़ा अंतर है। पैसा कमाना सफलता नहीं, विकास है। इस सफलता के लिए विचारों की पवित्रता, सत्यनिष्ठा और उनकी समृद्धि आवश्यक है। विचार स्पष्ट होने चाहिए । आलोचना किसी व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए नहीं बल्कि उसकी गलती बताने और सुधारने के इरादे से करनी चाहिए। जब कोई सही आलोचना करता है, तो यह फायदेमंद होता है क्योंकि इसे हम एक अच्छी सलाह के रूप में स्वीकार करते हैं। दुनिया में महान व्यक्तियों की भी आलोचना हुई है। किसी के काम की आलोचना कर सुधार करेंगे तो वह आगे ही बढ़ेगा। रतन टाटा ने एक दीक्षांत समारोह में एक अद्भुत बात कही, अपनी सफलता को अपने बैंक खाते की राशि से मत मापें। सफलता का एकमात्र पैमाना यह है कि आपने अपनी यात्रा में कितने लोगों के जीवन को बेहतर बनाया।

हम समाज में क्यो रहते है? इसका जवाब है समाज में रहकर समाजबंधु स्वयं का विकास कर सकता है इसलिए उसे सामाजिक प्राणी कहा जाता है। समाज में रहकर उसकी हर प्रकार की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। उसका चरित्र निर्माण होता है। उसको अपने सुख-दुख बाँटने के लिए किसी न किसी की आवश्यकता होती है और समाज इसमें मुख्य भूमिका को निभाता है। दूसरे अर्थ में कहे तो समाज व्यक्तियों का वह समूह या संग्रह है जो कुछ संबंधों या व्यवहार के कुछ ढंगों द्वारा संगठित है, जो उन्हें उन अन्यों से पृथक करते हैं जो इन संबंधों में सम्मिलित नहीं हैं या जो व्यवहार में उनसे भिन्न हैं। लेकिन अब समाज भिन्न भिन्न विचारो वाले समूहो में बंटता जा रहा है यह समाज विघटन की शुरूआत नही तो और क्या है। आखिखकार हम चाहते क्या है? और किस महान व्यक्ति या ऋषि के बताए हुए रास्ते पर चल रहे है किसी को कुछ पता है?. आज हम दोहरी मानसिकता में जी रहे हैं, हम केवल अपने स्वार्थ, अपने हित के लिए ही बोलते हैं। दूसरे के साथ हुई घटना का हमारे जीवन पर कोई असर नहीं होता। दूसरे के दुख को हम महसूस करना नहीं चाहते हैं। शायद इसीलिए आज समाज में कोई घटना घटती है तो समाज का कोई व्यक्ति उस पर नहीं बोलेगा। हर किसी के ज़हन में मदद करने से पहले एक ही सवाल होगा, ये तो दूसरे का मामला है, फिर मैं क्यूं बोलूं? पिछले दिनो उत्तरप्रदेश का अपने ही समाज मामला जानकारी में आया था जहां एक बहु को इसलिए पीटा जा रहा था कि उसने दो बार बेटीयो को जन्म दिया। इतना ही नही सास-ससुर भी उसे शारीरिक और मानसिक रूप से इस हद तक प्रताड़ित करते रहे कि बेटी घर छोड़कर यमराज को ढूंढने के लिए बेचैन हो गई। हम समाज में कई बार देखते है कि सज्जनो द्वारा ऐसी सलाह दी जाती है कि हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। इस बात से कोई असहमत नही होगा । करनी ही चाहिए । क्यूकी माता-पिता इस धरती के साक्षात भगवान है । लेकिन वे कैसे माता-पिता हैं? जिनकी घरे आई बेटे की बहू को दो बेटियाँ पैदा करने की सज़ा मिलती है? सास-ससुर वंश बढाने के लिए एक बेटा पैदा हो ऐसा चाहते थे। लेकिन बहू को लगातार बेटी हुई, बस यही उसकी सजा। आए दिन वे बहू को मारपीट करते रहे, लडका भी अपने माता-पिता के नकशे कदम पर चलता रहा। न उसे अपने बच्चो से लगाव । न अपनी पत्नी से । रोज बहू को ताने मारे जाते है, प्रताडित किया जाता है, बेटे की दूसरी शादी कराने की धमकी दी जाती है और माता पिता अपने बेटे को उसके खिलाफ भड़काते रहते है। बेटा सही या गलत कुछ नही देखता सिर्फ बदमाशी करता है। अत्याचार करता रहता है।

हमारे परिवार के बुजुर्गों को वटवृक्ष के समान माना जाता है। परिवार के हर फैसलो में उनका सम्मान किया जाता है, उनसे आशीर्वाद लिए जाते है, लेकिन जब ऐसे उदाहरण सामने आते हैं तो बेहद दुःखद महेसूस होता है । यह घटना हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज में बनी है इसलिए हृदयद्रावक लगी थी। आजतक हम यही सोचते रहे कि अन्य समाज में ही ऐसा होता रहा है लेकिन ब्राह्मण समाज में इतनी हलकी मानसिकतावाले परिवार भी है यह जानकर बेहद दुःख होता है। क्या कोई बताएगा कि आपके लडके को शादी करने के लिए लडकी मिली मतलब एक परिवारने कन्या दान की है..आपको सौपी है..क्या इतना काफी नही है?. कन्यादान सबसे बडा दान माना जाता है.क्या इतनी समझ हमारे ब्राह्मण समाज के सदस्यो में है?. हमारे हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज में भी इस तरह का चलन चिंताजनक और कलंककारी स्वरूप लेकर आगे बढता जा रहा है। ऐसे में परिवार की मदद के लिए कोई आगे नहीं आता. इतना ही नहीं.बहू की कोई नहीं सुनता. सास-ससुर की आवाज ऐसी होती है कि आस-पड़ोस के लोग भी उनकी बात सबसे पहले सुनते हैं। पीड़िता ने पुलिस को भी आवेदन दिया है. लेकिन ये नराधम और ब्राह्मण के नाम पर कलंकित लोग पुलिस को भी समझाकर आ जाते है। हद है ना? इसका नतीजा भी बहू को ही भुगतना है. आज भी पिटाई जारी है. कहा है समाज? कहा है महासभा? कहा है बुद्धिजीवी वर्ग?. इतना तो तय है कि कोई भी समस्या हमें तब तक परेशान नहीं करती जब तक वह हमारे घर की समस्या न बन जाए। अगर समाज के किसी घर में परेशानी हो तो हमें क्या? हम क्यू सहयोग करे? हमे क्या मिलेगा? हमे क्या लेनादेना?. हमें ये मानसिकता बदलनी होगी. यदि ऐसा नहीं हुआ तो समाज में बेटियां देना बंद हो जाएगा और समाज की बेटियां दूसरे समाज में ब्याही जाएंगी। हालाँकि अब ऐसा होने भी लगा है। ये तो सिर्फ एक राज्य की एक घटना की बात है. लेकिन हो सकता है ऐसी घटनाएं गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश में भी होती होगी। लेकिन समाज के सामने नही आ रही होगी।

हमारे गुजरात की बात करें तो हाल ही में हमने सामाजिक सोशियल समूहों की चर्चा देखी। जिसमें एक मामला ऐसा है कि फिलहाल हाईकोर्ट तक पहुंचा हुआ है.अगर आप उस मामले की निपटान शर्तों और मुद्दों के बारे में सुनेगे तो और अधिक आश्चर्यचकित हो जाएंगे। एक और चर्चा भी शुरू हो गई कि समाजबंधु एक-दूसरे के व्यापारिक और वित्तीय लेन-देन का भुगतान समय रहते नहीं करते हैं। तो वहीं एक मामला पिछले सामूहिक विवाह में बची पूंजी वापस लेने का था. ऐसे कई मामले हो सकते है जो धीरे धीरे सामने आते रहते है। हम किस समाज के सदस्य बने हुए हैं? जहाँ इतनी कमजोर विचारधारा या ऐसी मानसिकता वाले लोग रहते हैं कि वे अपनी मानसिकता बदलना नहीं चाहते और अपनी हलकी मानसिकता दूसरों पर थोपना चाहते हैं। क्यां हम नही सुधरेंगे? क्यां वाकई में हम मानवता या स्नेहभाव भूल चुके है? हालाकि ऐसे मामलो में प्रदेश स्तर पर या अध्यक्ष स्तर पर चर्चा या समाधानकारी बातचीत का रास्ता निकालने का मार्ग जरूर खोजा गया होगा,लेकिन नतीजा कुछ नही निकलता है. इस प्रकार की घटनाओ की वजह से होता यह है कि एक लम्बे समय के बाद वही पीड़ित लोग उभरकर समाज को ख़राब चित्रित करते हैं या सर्वश्रेष्ठ आलोचक बन जाते हैं। ऐसा इसलिये हो रहा है क्योंकि हमारे समाज का व्यवस्थित ढांचा तय नहीं है। सामाजिक व्यवस्था के नियम और विवादों को सुलझाने वाली टीम नहीं है। बुद्धिमान नागरिकों को समाज सुधार में कोई दिलचस्पी नहीं है। यदि उनका सम्मान करेंगे तो वे आने को तैयार हो जायेगे। लेकिन समाज के लिए कुछ करने को कहेंगे तो समय नहीं है कहकर हाथ खड़े कर देते हैं। कुछ साल बाद वही सदस्यो अपने बच्चों से कहेंगे कि हमारे समाज का कुछ नहीं होगा. लेकिन वे ये कभी नही बताते कि जब उनके पास समय था तो उन्होने समाज सुधार के लिए या समाज की प्रगति के लिए क्या किया? और क्यों नहीं किया?. बडी उलझने और काफी कन्फ्युजनवाला हमारा समाज है. जिसे किस दिशा में जाना है यह तय नहीं है. समाज को कहां लेकर जाना है यह भी तय नही है. दिशासूचन करनेवाला बुद्धिजीवी वर्ग भी सक्रिय नही है। क्यूकि ज्यादातर को अपने पैसे , अपने प्रोफेशन, अपनी प्रतिष्ठा और अपने स्वार्थ से मतलब होता है।

जिस समाज में क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर का नेतृत्व हो, वहां अगर सामाजिक सुधार की गुंजाइश नहीं होगी, तो कोई सामाजिक सुधार नहीं होगा. हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज के सदस्यों से करना चाहिए कि अगर समाज में किसी लड़की को गलत तरीके से परेशान किया जा रहा है या कुरितीयो से पीड़ित किया जा रहा है या किसी भी प्रकार का शोषण या हिंसा हो रही है तो वे अपनी आवाज उठाएं। ऐसा नही कि महिलाए ही प्रताडित हो रही है , कुछ जगहो पर पुरुष भी प्रताडित हो रहे होगे, नई बहू सास-ससुर से अलग रहने की जीद करने लग जाती है, सास-ससूर का ख्याल नही रखती है, उन्हे अपने माता-पिता की तरह नही मानती है इसलिए भी कई घर टूट रहे है । घर में ही वर्चस्व की लडाई शुरु हो जाती है। क्या यही है ब्राह्मण समाज? जिसे हम सर्वश्रेष्ठ कहते है? समाज में बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो अपने व्यवसाय या नौकरी में बेहद शानदार सफलता प्राप्त की हैं, लेकिन उन्ही के समाज में ऐसी घटनाएं भी घटित हो रही हैं और यदि ऐसे सफल लोग भी मूक दर्शक बनकर देखते हैं, तो यह उनकी सफलता में भी विफलता ही मानी जा सकती है। क्यूकी आप स्वयं अपने क्षेत्र में तो उन्नत हो गए है लेकिन आपने अपने समाज के लोगो का जीवन उन्नत करने में कोई भूमिका नही निभाई। आप समाज को कुछ देना नहीं चाहते. लेकिन समाज से बहुत कुछ पाने की उम्मीद रखते हैं। हमें यह तय करना होगा कि हमारे समाज में किन चीजों में सुधार की जरूरत है। गुजरात में कुछ मामले ऐसे भी होते है जो संवेदनशील होने पर समाज की पंचायत द्वारा फैसला लिया जाता है। आज हर कोई समाज में सम्मान चाहता है। यदि उनसे समाज के लिए कुछ करने को कहा जाए तो वे चुप हो जाते हैं। या फिर ये कहकर चले जाते हैं कि समाज के लिए समय नहीं है. लेकिन जब उनके घर में कोई परेशानी आती है तो वे गाना गाते हैं 'समाज ने मुझे क्या दिया?' समाज इसका समाधान क्यू नही करता? यह कितना उचित है? न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता और समानता ऐसे चार तत्व मिल जाते है तभी उन्नत समाज के निर्माण का सपना साकार होता है। अब हमे यह सोचना होगा कि क्या हम समाज में इस चार तत्व के लिए काम कर रहे है या नही?

आखिरकार हम किस तरह का समाज बना रहे हैं? भविष्य में इसका मूल्य क्या होगा? क्या हम वाकई में समाज का मूल्यवर्धन कर रहे है? यह हम सभी को समझना होगा. समाज में मानवता या सेवा भावना दिखाने के उदाहरण देने होंगे। अगर इसे पढने के बाद भी लेखक पर टिप्पणी या आलोचना करने की इच्छा हो तो हमें अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है। परिवार को टूटने से बचाने और घरेलू हिंसा की घटनाओं को रोकने के लिए समाज में एक सामाजिक टास्क फोर्स बनाने की तत्काल आवश्यकता है। समाज में युवाओं को सही दिशा दिखाने के लिए बुद्धिजीवियों या आईएएस या आईपीएस के साथ सेमिनार करने की जरूरत है। एक बिजनेसमैन के रूप में सफल होने के लिए समाज के सफल बिजनेसमैन के साथ एक सेमिनार भी आयोजित करना चाहिए। क्षेत्रीय महिला टीम का गठन किया जाना चाहिए। समाज के गरीब वर्गों को समाज के कोष से सहायता प्रदान की जानी चाहिए। धनवान परिवारों को समय-समय पर समाज के लिए सेवा शिविर या सामाजिक संगठन के लिए कोई कार्यक्रम आयोजित करने में तत्परता दिखानी चाहिए। सामाजिक संगठन को भी छोटे वर्ग की समस्याओं को समझना होगा। जरूरत पड़ने पर काउंसिलिंग के लिए टीम भी भेजनी होगी। लाभार्थी समाजबंधुओ को सरकारी सहायता प्राप्त हो उसके लिए भी आवश्यक मदद करनी होगी। समाज के बुजुर्ग एवं वरिष्ठजनों के जीवन अनुभवों को जानने के लिए भी अलग से कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए। युवक-युवतियों की परिचयात्मक बैठक आयोजित की जाए। समाज में ही युवक-युवतियों के विवाह के लिए आवश्यक नियम बनाये जाने चाहिए। समाज के लिए एक वित्तीय सहायता सेल की घोषणा की जानी चाहिए और इससे सहायता कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए नियम और दिशानिर्देश निर्धारित किए जाने चाहिए। यदि आप एक वर्ष में कम से कम पांच से 10 जिलों का दौरा करते हैं, तो आप समुदाय के सदस्यों से आसानी से फिडबैक प्राप्त कर सकते हैं। अगर कोई आलोचक है तो उसका भी स्वागत होना चाहिए. कुरीतियो को रोकने के लिए जमीन स्तर पर ठोस उपाय किये जाने चाहिए। यदि यह सब होने लगेगा तो समाज में सक्रियता अवश्य बढ़ेगी। भरोसा भी बढता है। लेकिन ऐसे रचनात्मक कार्य नही हो पा रहे है। हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचे, इसी शुभकामना के साथ समाज के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे सक्रिय रहें और समाज के लिए अपना यथाशक्ति योगदान देते रहें। युवा शक्ति समाज की उन्नति के लिए आगे आए, समाज कार्यक्रमो में बढ-चढकर हिस्सा ले और समाज संगठन में सक्रिय भूमिका निभाए यह समाज हित और समाज की प्रगति के लिए बेहद अनिवार्य है।

(इस लेख का उद्देश्य किसी व्यक्तिविशेष का विरोध करना नहीं बल्कि सत्य तथ्यों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करना है)

बापलावत-कूकसा पंचोली-बसवाडा-वैद्य गौत्र के समाजबंधु कुलदेवी के स्वरुप में करते है पूजा

सांवली माता, वली माता, चामुण्डा माता एवं कूकसा माता से प्रचलित है

माताजी का स्थान

भक्तिरस
पंकज शर्मा

अहमदाबाद : हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात की टीमने गौत्र , कुलदेवी की खोज एवं उनका सही प्रकार से विवरण समेत जानकारी जुटाने के लिए मुहिम छेडी है। संभव है कि हमें जो जानकारी मिली है उसमें शोध की गुंजाइश हो.. लेकिन हमने कुलदेवी के स्थान पर रहने वाले पुजारी से जानकारी हासिल करने का भी अथक प्रयास किया है। ताकि ज्यादा अच्छी तरह से जानकारी मिल सके। इस कडी में हमें कूकस गांव में स्थित कूकसा माता मंदिर के बारे में जानकारी जुटाई। हम आपको इस मंदिर के बारे में वो सब कुछ बताना चाहते हैं जो आपके लिए जरूरी है । खासकर उन लोगों के लिए जिनकी यह कुलदेवी देवी है। हम इस रिपोर्ट में आपको बताएंगे हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज में कई गौत्र में कुलदेवी मानी जाने वाले कूकसा माता मंदिर एवं उनके स्वरूप के बारे में।

जयपुर से 18 किमी की दूरी पर और आमेर तालुका से 9 किमी की दूरी पर कूकसा नाम का एक गांव है..जहां कूकसा माता का मंदिर स्थापित है। हालांकि, कूकस गांव से ढाई किलोमीटर अंदर वन क्षेत्र में जाकर इस मंदिर तक पहुंचा जाता है। यह मंदिर कोई बड़ा या भव्य नहीं है। लेकिन यह एक छोटी सी जगह पर स्थित । मंदिर के आसपास सुनसान जगह नजर आती । यह क्षेत्र वन क्षेत्र के अंतर्गत आता है। जब आप कूकसा गांव से होते हुए वन क्षेत्र में कूकसा माताजी के मंदिर में प्रवेश करेंगे तो आपको दो प्रतिमाएं दिखाई देंगी। कहा जाता है कि ये दोनों मूर्तियां असल में कूकसा माताजी ही हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां पर माताजी का साक्षात वास है। आप सोच रहे होंगे कि दोनों मूर्तियों में से कुकसा माता कौन हैं? तो हम आपको बता दें कि कूकसा माता चामुंडा माताजी का ही नाम है। जी हां.. चामुंडा माता मंदिर में आपने हमेशा दो माताजी के स्वरूप देखे होंगे, यहां वही चामुंडा माताजी विराजमान हैं। दिलराज शर्मा (बंदावाला) पिछले पांच वर्षों से इस मंदिर में माताजी की नियमित पूजा और सेवा कर रहे हैं। उन्होंने एक पुजारी के रूप में अपने कई अनुभव भी हमारे साथ साझा किये।

माताजी के मंदिर के बारे में पुजारी दिलराज शर्मा(बंदावला) ने गुजरात पत्रिका टीम को बताया कि कूकसा माता का मंदिर 700 से 800 साल पुराना बताया जाता है। यहां मंदिर की माता स्वतः ही(स्वयंभू) प्रकट हुई थी। ये मां हैं चामुंडा माताजी.. कूकस गांववाले और आसपास के स्थानिय लोग इस मंदिर को चामुंडा माता के नाम से ही जानते हैं। लेकिन हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज और मीणा समाज के लोग माताजी को अलग-अलग नामों से जानते हैं। कूकस गांव में होने के कारण माताजी का नाम कूकसा माताजी स्थापित हो गया है। जैसे कि हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज के कुछ गौत्रों में यह माताजी कुलदेवी हैं। जैसे भसवाड़ा, कूकसा पंचोली, बापलावत,वैद्य गोत्र। इन गौत्र में कूकसा माता कुलदेवी मानी गई है इसलिए इस गोत्र के लोग नियमित रूप से और साल में एक या दो बार यहां दर्शन के लिए आते हैं। और वे माताजी को कुकसा माता के रूप में ही पूजते हैं। इसीलिए इन्हें कूकसा माता कहा जाता है।

पुजारी ने बताया कि कुकसा माता को वली माता या सांवली माता के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम मीना समुदाय ने दिया है.. क्योंकि यही माताजी को मीणा समुदाय में भी पूजा जाता है। कूकसा गांव में कभी बड़ी संख्या में मीणा समुदाय के लोग रहते थे। और वे इसी स्थान पर चामुंडा माता की पूजा करते थे। वे माताजी को सांवली माता या वली माता कहते थे। इसलिए लोग इस मंदिर में माताजी को इन दोनों नामों से जानते हैं। यह भी कहा जाता है कि माताजी की दोनों मूर्तियां कठेड़ा नामक पेड़ के नीचे से स्वयंभू ही प्रकट हो गई थीं। हालाँकि, सटीक विवरण किसी के पास नहीं है। कूकसा पंचोली गौत्र के लोगों ने यही से निकासी की थी। इसलिए वे वर्षों से माताजी की पूजा करते आ रहे हैं। क्योंकि ये गांव उनका भी माना जाता है।

कूकसा माता के इस मंदिर में हर साल लगभग चार से पांच हजार श्रद्धालु आते हैं। इनमें हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज के एक हजार श्रद्धालु हर साल यहां दर्शन के लिए आते हैं। मन्नत मांगना और विशेष पूजा-अर्चना कर माताजी की आराधना करते है और दर्शन करके अपने आपको धन्य हुआ महसूस करते है। कूकसा माताजी के मंदिर पर साल में एक बार जनवरी माह में संक्रांति से पहले भंडारा का आयोजन किया जाता है। यहां पौष बड़ा का त्योहार मनाया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भंडारे में दान करते हैं और महाप्रसादी का लाभ भी लेते हैं। दान के रूप में प्राप्त धन से भंडारे चलाए जाते हैं।

इसके अलावा साल में आने वाली बड़ी और छोटी नवरात्रि में भी यहां माताजी की पूजा की जाती है। नौ दिनों के बाद माताजी का जागरण भी किया जाता है। इतना ही नहीं, नौ दिनों के बाद 21 कन्याओं को भोजन भी कराया जाता है। भादरवा माह में कूकसा माताजी के मंदिर तक पदयात्रा का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें कूकस गांव से दूर स्थित दुर्गा माता के मंदिर से ज्योत जलाई जाती है। फिर भक्त इस ज्योति को चार किलोमीटर तक पदयात्रा करते हुए कुकसा माता मंदिर में लाते हैं। इस पदयात्रा में भी 700 से ज्यादा श्रद्धालु शामिल होते हैं. और ज्योति के दर्शन के साथ-साथ माताजी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। मंदिर को साल भर में करीब 10 हजार का दान मिलता है। जिसका उपयोग माताजी की महाप्रसादी के पीछे किया जाता है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए आप जयपुर रेलवे स्टेशन से आमेर तक निजी वाहन या बस से जा सकते हैं। यहा जागरण भी किया जाता है, अगर आप भी जागरण करवाना चाहते हो तो आप मंदिर के पुजारी दिलराज शर्मा का संपर्क कर सकते है उनका मोबाईल नंबर 9782211543, 9785896796 पर संपर्क करके सहयोग प्राप्त कर सकते है।

माता चामुंडाजी को प्रसन्न करने के लिए मंत्र अवश्य करे - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ।। ।। क्लीं ह्रीं ऐं चामुण्डाये विच्चे ।।

यदि आप हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समुदाय से हैं और आपको यह लेख पसंद आया है तो कृपया हमें प्रतिक्रिया दें। इस मंदिर के बारे में लिखा गया लेख पुजारी से बातचीत, स्थानीय लोगों से बातचीत और समाज में माताजी के बारे में लिखे गए लेख के संदर्भ पर आधारित है। हम लेख के माध्यम से कोई दावा नहीं करते हैं।

(अपने सुझाव या प्रतिक्रिया इमेईल करे - guj.abhgb@gmail.com)

सूचना

समाज की इस पत्रिका में लेख, आर्टिकल या विज्ञापनदाता द्वारा किए गए किसी भी प्रकार के दावे या प्रस्तुतिकरण के लिए पत्रिका प्रबंधन जिम्मेदार नही है, पत्रिका का उद्देश्य समाज की जानकारीया और समाजबंधुओ से मिलनेवाली सकारात्मक खबरो को सही ढंग से लोगो तक पहुंचाना है।

जानें इस अनोखें मंदिर के बारे में !

जोबनेर की ज्वालामाता

• हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज के कई गौत्र में कुलदेवी के स्वरुप में पूजी जाती हे ज्वाला माता • इस शक्तिपीठ पर होती हैं माता के घुटने की पूजा, इस मंदिर को जालपा देवी या जालपा माता का मंदिर के नाम से भी पहचाना जाता है। • लोकमान्यताओ के मुताबिक यहां माता ने मधुमखी के रूप में की थी राजा की सहायता • हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज के कई गौत्र की कुलदेवी माना जाता है.... जैसे कि कुलाणिया, जासडावत, बोहरा, भूंगा, झाजडा, भोपलावत समेत कई गौत्र के लोग कुलदेवी के स्वरुप में माताजी को पूजते है

हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज में कुलदेवीओ के बारे में लिखा तो गया है लेकिन विस्तृत रूप से फोटो समेत जानकारी बेहद कम ही प्रकाशित होती है. गुजरात पत्रिका अंक के पांचवे संस्करण में हम आपको जोबनेर की ज्वाला माताजी के स्वरूप, उनके इतिहास एवं मंदिर में होनेवाले कार्यक्रमो के बारे में विस्तृत जानकारी रखने की कोशिष की है।

जोबनेर शहरकी पहाड़ी पर स्थित ज्वाला माता कामनाप्रद सिद्ध पीठ के रूप में प्रसिद्ध है। नवरात्रा पर देशभर से लोग माता के दर्शन के लिए आते हैं। माता को विशेष सोलह श्रृंगार कर नौबत शंख वादन के साथ महाआरती की जाती है। माता के दरबार में अखंड दीप ज्योति हमेशा प्रज्जवलित रहता है। पहाड़ी पर ज्वाला माता का मंदिर मूल रूप से चौहान काल में संवत 1296 में बनाया गया था। सन् 1600 के आसपास जगमाल पुत्र खंगार जोबनेर के प्रतापी शासक हुए, जो ज्वाला माता के परम श्रद्धालु थे। राव खंगार ने अपने गढ़ के सामने विशाल दरवाजा बनवाया जो ज्वाला पोल के नाम से जाना जाता है। दरवाजे पर स्वप्न को लेकर पंक्ति अंकित है आईजी सपनै राव खंगार कै। 1619 से 1638 के शासनकाल में जोधपुर महाराजा गजसिंह के लिए ज्वाला की कृपा पाने का उल्लेख भी मिलता है।

जयपुर से 50 किलोमीटर के अंतर में स्थित जोबनेर में पहाड़ी पर धार्मिक आस्था और शक्तिपीठ स्थल के रूप में मशहूर ज्वाला माता के यहां शारदीय नवरात्र में लक्खी मेला लगता है। यह मेला 15 दिन तक निरन्तर चलता है। यहां साल में दो मेलों का आयोजन होता है, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु माता के दर्शनों को आते हैं। पौराणिक मान्यता है कि यहां माता के घुटने की पूजा की जाती है।

मंदिर के पुजारी सतिष परासर ने बताया कि मंदिर के नीचे लांगुरिया बलवीर ऊंचे चबूतरे पर विराजमान हैं। लांगुरिया को भैरव भी कहा जाता है, जो माता के रक्षक माने जाते हैं। ठिकाने से मेले के लिए भक्तों को परवाना भेजा जाता है, जिसे राव जाति के लोग भक्तों तक लेकर पहुंचते हैं। मेले में पहुंचे वाले अलग-अलग पंथ के लोगों का पूर्व राजपरिवार की ओर से पाग, शिरोपाव व नारियल देकर सम्मान किया जाता है। मान्यता है कि निसंतान दंपति संतान की कामना लिए माता के मुख्य द्वार पर मेहंदी से हाथ का छापा और उल्टा स्वास्तिक बनाते हैं। रोगों से मुक्ति के लिए महिलाएं माता के यहां शरीर का कोई एक वस्त्र छोड़कर जाती है।

पूर्व राजपरिवार के संग्राम सिह ने बताया कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार प्राचीन काल में मां पार्वती का अधजला शरीर कुंड से निकालकर क्रोधित शिव ने तांडव किया था। तांडव के दौरान जांघ से घुटने तक का हिस्सा यहां जोबनेर में गिरा, जो शक्तिपीठ कहलाया। यहां माता के घुटने की पूजा की जाती है। मंदिर को 732 वर्ष साल पहले मूल रूप चौहान काल में दिया गया था। माता के परम भक्त राव खंगार को मां ने सपने में आकर मंदिर में मंडप बड़ा करने व मेला लगाने की प्रेरणा दी थी।

राव खंगार के पुत्र जैतसिंह के शासनकाल में अजमेर के शासक मोहम्मद मुराद ने हमला कर जोबनेर ज्वाला माता मंदिर और चार किलों को ध्वस्त करने की रणनीति बनाई थी। मोहम्मद मुराद 32 हजार 200 सैनिकों के साथ हमले के लिए निकल पड़ा था। चिंतित जैतसिंह ने ज्वाला माता का स्मरण किया और सैनिकों के अलावा स्थानीय लोगों और वहां एक बारात में आए हुए बारातियों सहित आठ हजार लोगों को तैयार किया। माता ने जैत सिंह के सपने में आकर कहा कि तेरी फतह होगी। रात में रास्ते में विश्राम के लिए रुकी मुराद की आधी सेना को जैतसिंह ने मौत के घाट उतार दिया।

Note : यदि आप हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समुदाय से हैं और आपको यह लेख पसंद आया है तो कृपया हमें प्रतिक्रिया दें। इस मंदिर के बारे में लिखा गया लेख पुजारी से बातचीत, स्थानीय लोगों से बातचीत और समाज में माताजी के बारे में लिखे गए लेख के संदर्भ पर आधारित है। हम लेख के माध्यम से कोई दावा नहीं करते हैं।

(अपने सुझाव या प्रतिक्रिया इमेईल करे - guj.abhgb@gmail.com)

सांगानेर निवासी गोविंद शर्मा ने 24 साल गुजरात-सौराष्ट्र में बिताए

सरकारी नौकरी हो तो कहीं भी काम करने जाना पड़ता है..हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज में बहुत सारे सरकारी कर्मचारी हैं. जो इस पद पर कार्यरत हैं. राजस्थान से गुजरात आए गोविंद शर्मा ने कई साल सौराष्ट्र में बिताए हैं. पत्रिका टीम को उनसे कुछ जानकारी मिली.. जो बेहद दिलचस्प थी। गोविंद शर्मा द्वारा दी गई जानकारी इस प्रकार है।

मेरा नाम गोविंद शर्मा है और मेरे पिताजी राम कल्याण शर्मा गुजरात में गुजरात घेंटा अवं ऊन विकास निगम (जीएसडब्ल्यूडीसी) में वुल इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। और उन्होंने अपनी पूरी 32 साल की सर्विस करने के पश्चात, रिटायर होने के बाद हाल अभी जयपुर सांगानेर में निवास करते हैं। हम सभी दो भाई व बहन ने गुजरात से ही शिक्षा प्राप्त की है। और गुजरात मे रहने कारण मेरा विवाह भी अहमदाबाद गुजरात हाल वस्त्राल निवासी रामाधार जी शर्मा की सुपुत्री कल्पना शर्मा के साथ हुआ है , मेरे दोनों साले साहब विजय रामाधार शर्मा और निलेश रामाधार शर्मा भी वस्त्राल में ही रहते हैं। इस तरह मेरा पूरा एजुकेशन गुजरात में ही हुआ है।

बेटी निकिता शर्मा टीचर हैं, फिलहाल आगे की पढ़ाई के लिए कनाडा में MBA कर रही हैं

मैंने बालमंदिर से लेकर कक्षा 9 तक राजकोट में पढ़ाई की है। और उसके पश्चात पिताजी का कच्छ भुज में ट्रांसफर होने पर वहां की अल्फ्रेड हाई स्कूल भुज से 10th पास करी थी ओर इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी।

उसके बाद फिर ट्रान्सफर होने पर पापा ने राजकोट, जामनगर, जसदण में सर्विस की थी और इस तरीके से मैंने फिर वापस राजकोट में ही आगे की पढ़ाई की। मेरे भाई साहब सुरेश कुमार शर्मा का विवाह भी बडौदा, कारेलीबाग में ही हुआ है। मैंने बीटेक इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग करने के बाद हाल जयपुर का सबसे बड़ा व पुराना हॉस्पिटल (52 साल) संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हॉस्पिटल, (एसडीएम ऐच) में कम्युनिकेशन मैनेजर, के पद पर कार्यरत है। मेरी बेटी निकिता शर्मा ने सांगानेर, मानसरोवर मे इंटरनेशनल कॉलेज फॉर गर्ल्स से बीएससी- बी एड (मैथ्स) से डिग्री प्राप्त की है। और यहां की स्कूल में टीचर की जोब भी कर रही थी। उसके बाद हाल (कनाड़ा) वेंकूवर में जुलाई 2023 इंटेक में एमबीए की पढ़ाई कर रही है। और उसका जयपुर से टीचिंग की डिग्री व एक्सपीरियंस होने के नाते, (केनेडा) वेंकूवर की प्रतिष्ठित स्कूल में चाइल्ड केयर सुपरवाइजर के पद पर भी कार्यरत है। और साथ ही युनिवर्सिटी केनेडा वेस्ट, वेंकूवर से MBA की पढ़ाई भी कर रही है। उसका सभी युवा साथियों से अनुरोध है कि किसी भी भाई-बहन को विशेष कर (कनाडा) वैंकूवर में किसी भी कोर्स के बारे में सहायता या उससे संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हो तो नि:संकोच मुझे बताएं। मेरा सोचना यह है कि हमारा हरियाणा गॉड ब्राह्मण समाज का कोई भी सदस्य देश के किसी भी कोने में रहता हो। और उसे मुझसे पढ़ाई व जोब के संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी या सलाह सूचन की जरूरत हो तो मुझे तुरंत संपर्क कर सकता हैं। और में समाज के बच्चों की मदद करने के लिए हंमेशा तत्पर रहूंगी। मेरा ई-मेईल nikishrma18@gmail.com है..जिस पर संपर्क कर सकते है । समाज के प्रति मेरा दायित्व भी बनता है कि किसी भी बच्चे को या भाई बहन को विदेश मे पढ़ाई के संबंधित जानकारी प्राप्त करनी हो तो मुझे बेझिझक कांटेक्ट कर सकता है।

राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिनिधित्व करने वाले
गुजरात के समाजबंधुओं को शुभकामनाएँ एवं अभिनंदन

कमलेश महादेवजी शर्मा

गौत्र : पानवाडिया
किस राजकीय पार्टी में? : आम आदमी पार्टी
पार्टी में पद : जॉइंट सेक्रेटरी,
अहमदाबाद डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन सेल
कितने वर्ष से सक्रिय? : 5 वर्ष से सक्रिय
पता : C/20 पुष्कर बंगलोज, जेठा भाई की वाव के सामने,
इसनपुर वटवा रोड अहमदाबाद

हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज-गुजरात

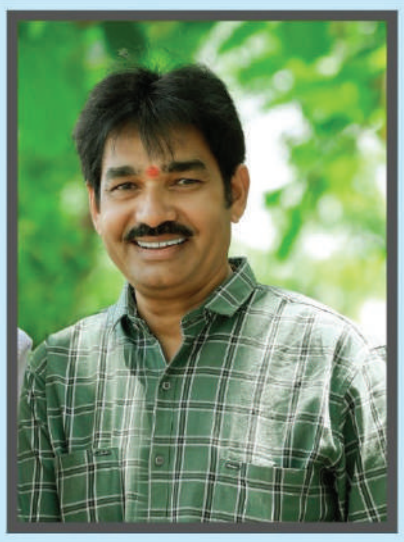

जगदीशप्रसाद नंदकिशोर शर्मा

गौत्र : बंदावला
किस राजकीय पार्टी में? : कांग्रेस पार्टी
पार्टी में पद : पाटण शहर उपाध्यक्ष,
पाटण शहर कांग्रेस कमेटी
कितने वर्ष से सक्रिय? : 16 साल से सक्रिय
पता - 15, स्लोक विला सोसायटी, पाटण (उत्तर गुजरात)

हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज-गुजरात

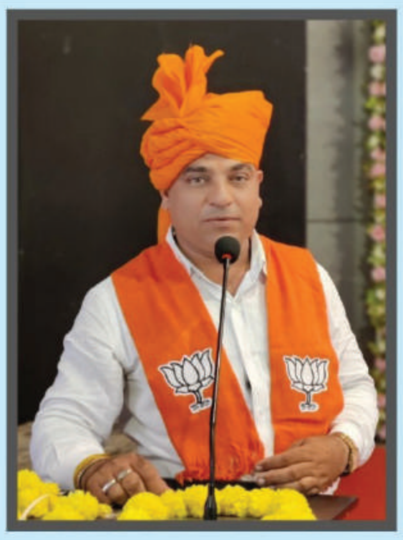

योगेन्द्र रमणलालजी शर्मा

गौत्र : हल्दिनिया
किस राजकीय पार्टी में? : भारतीय जनता पार्टी(भाजपा)
पार्टी में पद : शहर भाजपा अध्यक्ष,
दहेगाम शहर, जिला गांधीनगर
कितने वर्ष से सक्रिय? : 15 साल से सक्रिय
पता : दहेगाम, जिला गांधीनगर

हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज-गुजरात

हरियाणा गौड ब्राह्मण - इसनपुर (अहमदाबाद) इकाई द्वारा श्रावण मास के शुभ अवसर पर

शिव सार्वजनिक महाप्रसादी

का आयोजन किया गया

मुखी की वाडी, इसनपुर वटवा रोड, इसनपुर, अहमदाबाद में शिव भोजन महाप्रसादी का आयोजन किया, जिस में कई समाजबंधुओने उपस्थिति दर्ज करवाई, महाप्रसादी का लुफ्त उठाया

पाटण-गुजरात सेवा संगठन की टीम ने नवनिर्मित स्टूडियो का निरीक्षण किया

8 अक्टूबर 2023 को अखिल गुजरात हरियाणा गौड ब्राह्मण सेवा संगठन की प्रदेश टीम ने पाटण का दौरा किया। जहां पाटण-बनासकांठा-सिद्धपुर द्वारा आयोजित जिला स्तरीय बैठक में भाग लिया। सामूहिक विवाह का आयोजन, तारीख, कार्यान्वयन सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई.. बैठक समाप्त होने के बाद गुजरात सेवा संगठन टीम के प्रदेश अध्यक्ष संजय पंडित, कोषाध्यक्ष सुरेश भाई पंडित, महासचिव योगेन्द्र शर्मा सहित बुद्धिशंकर पंडित, समाज के वरिष्ठजन और पाटण-बनासकांठा जिला संगठन के पदाधिकारियों ने पाटण में जगदीश शर्मा द्वारा बनाये गये नये स्टूडियो का निरीक्षण किया। करीब 6 हजार वर्ग फुट क्षेत्रफल में बने अत्याधुनिक स्टूडियो में "बोर्न बेबी" और "चाईल्ड फोटोग्राफी" के लिए विशेष बनाई गई सुविधाओ के बारे में जानकारी प्राप्त की । स्टूडियो का निरीक्षण करने के बाद प्रदेश टीम काफी प्रभावित हुई और स्टूडियो के संचालक एवं फोटोग्राफर जगदीशभाई शर्मा को बधाई दी।

अहमदाबाद में बॉलीवुड फिल्म जैसा साइबर सेंटर

समाज के युवा ध्रुव पंडितने बनाया अद्भुत कमांड कंट्रोल सेंटर, जाने बड़ी कंपनियों को कैसे दी जाती हैं डिजिटल सुरक्षा?

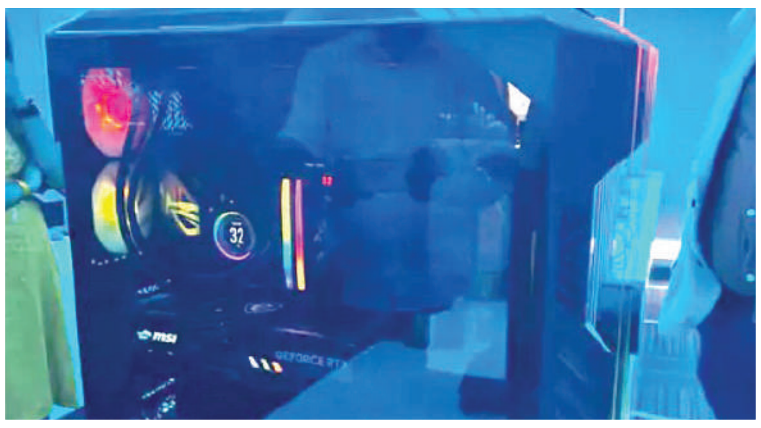

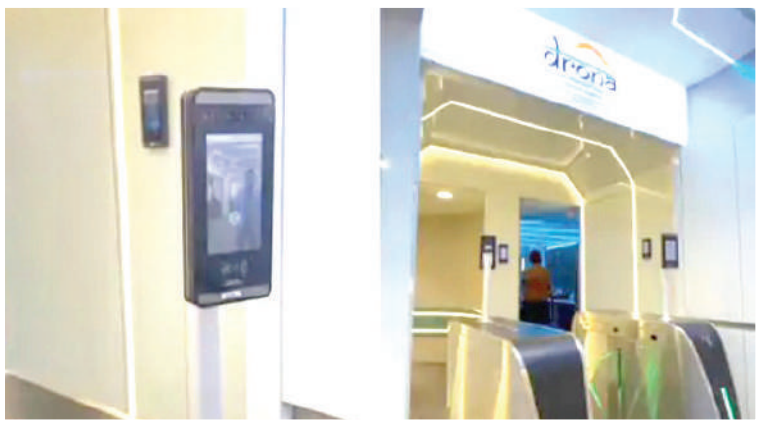

बढ़ते डिजिटलीकरण के साथ डिजिटल अपराध भी बढ गया है। आजकल हर दिन एक नया साइबर क्राइम सामने आता है, जिसके खिलाफ टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल भी जरूरी है। जिस तरह स्मार्ट सिटी, ट्रैफिक, राज्य और आपदा पर एक ही जगह से नजर रखने के लिए कमांड कंट्रोल सेंटर बनाया जाता है, उसी तरह साइबर क्राइम पर नजर रखने के लिए अहमदाबाद के ध्रुव पंडित ने गुजरात का पहला इंटीग्रेटेड साइबर सिक्योरिटी कमांड कंट्रोल सेंटर बनाया है। यह कमांड कंट्रोल सेंटर सरकारी नहीं बल्कि निजी है, जो साइबर से जुड़ी 30 से ज्यादा सेवाएं देगा. विशेष रूप से बड़ी कंपनियों में रैंसमवेयर हमलों से रक्षा कर सकता है। अहमदाबाद के ध्रुव पंडित ने एक निजी साइबर सुरक्षा कमांड कंट्रोल सेंटर शुरू किया है। बडी कंपनियों पर रैनसमवेयर अटैक, इस सेंटर से मिलेगी डिजिटल फॉरेंसिक लैब की सुविधा इस कमांड कंट्रोल सेंटर में लोगों को 30 से ज्यादा छोटी-बड़ी सुविधाएं मिलेंगी.

हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज के युवा बंधु ध्रुव पंडित ने अहमदाबाद के भुयंगदेव के पास द्रोणा नाम से साइबर सिक्योरिटी कमांड कंट्रोल सेंटर बनाया है. द्रोणा का नाम सनातन धर्म के नाम पर रखा गया है। यह कमांड कंट्रोल सेंटर पूरी तरह से डिजिटल है और इसमें प्रवेश से लेकर निकास तक के सिस्टम को डिजिटल रखा गया है. अगर कोई अनाधिकृत व्यक्ति भी अंदर प्रवेश करेगा तो अंदर बैठे लोगों को तुरंत सूचना मिल जाएगी। केंद्र में काम करने वाले व्यक्तियों के चेहरे के आधार पर ताला रखा जाता है, ताकि चेहरा दिखाने पर ही ताला खुले। कमांड कंट्रोल सेंटर को पूरी तरह से डिजिटल बना दिया गया है.

कमांड कंट्रोल सेंटर में 30 विभिन्न सेवाएँ रखी गई हैं। यह सेवा नये बिल के अनुसार है. सेवा में एक एकीकृत डिजिटल फोरेंसिक लैब बनाई गई है। इस लैब में कंप्यूटर फोरेंसिक, लैपटॉप फोरेंसिक, ई-मेल फोरेंसिक, क्लाउड फोरेंसिक और नेटवर्क फोरेंसिक डिजाइन किए गए हैं। ये सभी लाइसेंस प्राप्त सॉफ़्टवेयर बरकरार रखे गए हैं। यहां एक वर्क स्टेशन भी है, इस वर्क स्टेशन को जर्मनी से मंगवाया गया था और लैब में ही असेंबल किया गया था।

इस वर्क स्टेशन का उपयोग विशेष रूप से डिजिटल फोरेंसिक के लिए किया जाता है। किसी भी साइबर हमले या डेटा भ्रष्टाचार के मामले में डेटा पुनर्प्राप्त करने के लिए डिजिटल फोरेंसिक का उपयोग किया जाता है। डिजिटल फोरेंसिक की तीन अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं। संग्रह, निष्कर्षण और विश्लेषण. डेटा इकट्ठा करने के लिए एक हाई प्रोसेसिंग वर्क स्टेशन की आवश्यकता होती है जिसके अनुसार हमारे पास एक वर्क स्टेशन होता है। रैंसमवेयर होने पर हम डेटा पुनर्प्राप्त करते हैं।

लैब में 10 अलग-अलग टूल किट हैं। डेटा संग्रहण के लिए एक टूल किट रखी जाती है। मोबाइल, लैपटॉप, हार्डवेयर या सर्वर डेटा को विभिन्न टूल के माध्यम से कॉलोनाइज करके डेटा प्राप्त किया जाता है। यह एक चल टूल किट है. हमारे फोरेंसिक अधिकारी इस किट के साथ जाते हैं और वहां बैठकर क्लाइंट पर काम कर सकते हैं।

लैब में लाइव साइबर थ्रेड के लिए एक सिस्टम बनाया गया है. इस सिस्टम के जरिए कंपनी में किसी भी साइबर हमले पर नजर रखी जा सकती है और उसका पता लगाया जा सकता है। कंपनी में कितने इवेंट होते हैं इस पर नजर रखी जाती है. नेटवर्क में कितने साइबर हमले होते हैं इस पर नजर रखी जाती है. अगर कोई हैकर सिस्टम में घुसता है तो हम इसकी जानकारी भी देते हैं. साइबर हमलों के संबंध में अलर्ट भी उत्पन्न होते हैं जिन्हें रोका जा सकता है।

साइबर विशेषज्ञ ध्रुव पंडित ने कहा, कमांड कंट्रोल सेंटर बनाया गया है जो गुजरात का पहला कमांड कंट्रोल सेंटर है। सनातन धर्म को ध्यान में रखते हुए हमने सेंटर का नाम द्रोणा रखा है। यह कमांड कंट्रोल सेंटर डिजिटल फोरेंसिक लैब में वापस भेजा जाता है, डेटा जो डार्क वेब पर चला गया है। ब्रांड्स पर नजर रखी जाती है. वेबसाइट फेल न हो, डेटा लीक का पता लगाने, डेटा रिकवरी, सिस्टम में कोई हैकर आया है या नहीं, इसका पता लगाने के लिए साइबर अटैक मॉनिटरिंग सिस्टम भी रखा जाता है।

ध्रुव पंडित ने आगे कहा कि भारत में हर दिन एक नया साइबर हमला होता है. रैंसमवेयर हमले बड़ी कंपनियों में होते हैं। सभी धोखाधड़ी को रोकने के लिए व्यावसायिक ई-मेल का भी दुरुपयोग किया जाता है। हम कॉर्पोरेट हनीट्रैपिंग या सेक्सटॉर्शन से निपटते हैं। वर्तमान में हमारे साथ 25 से अधिक कंपनियां काम कर रही हैं। हम वे सभी सेवाएँ एक के बाद एक प्रदान करते हैं। कानून प्रवर्तन एजेंसी में हम डिजिटल फोरेंसिक लैब की मदद करते हैं। हम विश्लेषणात्मक रिपोर्टों में भी काम करते हैं।

दिल्ली से गयाप्रसाद बलेसराने बताई समाज जीवन में कैसे शुरु हुई अपनी जीवन यात्रा?

हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज में अपने समाज जीवन के कार्यकाल के बारे में पत्रिका टीम को बतानेवाले सर्वप्रथम वरिष्ठ समाजबंधु

गयाप्रसाद बलेसरा, दिल्ली : प्रिय बंधुओं मेरा जन्म गरीब किसान परिवार, गांव - पला सल्लू , अलीगढ़ उप्र, 1 जनवरी 1964 को हुआ, कक्षा 10 वीं फेल होने के तदपुरांत, 25 नवंबर 1980 को रोजी रोटी की तलाश में दिल्ली आगमन हुआ। दिल्ली समाज के प्रथम अध्यक्ष जमुना प्रसाद जी की अगुवाई में शायद अगस्त सितम्बर माह 1981 में छोटी सी मीटिंग में करीब 6-7 समाज बंधु में मैं भी शामिल था यह मेरा आदरणीय समाज बंधुओं से प्रथम परिचय था.उस समय मेरे पास समाज अंशदान के लिए 25/- रूपए नहीं थे और मैंने 25/- रूपए आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी से उधार लेकर अंशदान दिया और एक वर्ष बाद 1982 गुड़ मंडी, दिल्ली में एक विशाल आयोजन जिसमें वर्तमान के अध्यक्ष महोदय जमुना प्रसाद जी की अध्यक्षता में एक विधवा स्त्री को सहयोग स्वरूप सिलाई मशीन भेंट की गई और आदरणीय भोलेराम जी के द्वारा भजन गायन किया गया. उसके बाद सभी समाज बंधुओं ने सुरुचि भोज किया था.जहां पर में केवल एक और समाज बंधु से परिचय भजन प्रस्तुति के कारण भोलेराम जी से हुआ।

उसके बाद शायद 1982-83 में समाजिक एकजुटता का विघटन हो गया।1982 में जब आदरणीय "श्री जमुना प्रसाद जी", दिल्ली समाज के प्रथम अध्यक्ष मेरे प्रेरणा श्रोत रहे। आपसे प्रेरणा लेकर दिल्ली समाज से रूबरू होने के सपने देखने लगा, आप के उपरांत 1992 में "स्वर्गीय श्री नित्य गोपाल जी" के अध्यक्ष काल में प्रथम कार्य सहर्ष स्वीकार किया जो कुछ समाज बंधुओं के हस्ताक्षर लेने थे। मैं सुबह 05:30 बजे घर निकल कर नोएडा करीब 7 बजे सुबह "श्री सुरेश जी" के निवास पर चाय नाश्ता नोएडा में किया, वहां से चलकर आश्रम "स्व श्री रामबाबू शर्मा जी", यहां से जलपान के बाद लाजपत नगर "श्री कमल जी" ने बड़े प्यार से खाना खिलाया फिर यहां से "भीकांमाजी प्लेस" में इंडो बर्मा पेट्रोलियम के ऑफिस में आदरणीय "श्री भोले राम जी" के छोटे भाई आदरणीय "श्री श्रीराम जी" मैनेजर थे किन्तु रविवार होने के कारण आफिस बंद था वहां से पटेल नगर में आदरणीय "श्री राधेश्याम जी" से केले के गोदाम पर मिला, जलपान के बाद नत्थूपुरा में "श्री सुभाष चन्द्र जी" के हस्ताक्षर व जलपान के बाद वापसी में आदरणीय "स्व श्री नानक चंद जी शास्त्री नगर" से मिलने के बाद "पटेल नगर डी डी ए फ्लैट" में आदरणीय "श्रीराम जी" से मिला और रात्रि का खाना बड़े प्यार मान सम्मान से खिलाया फिर वहां से आश्रम 10 मिनट रुक ने के बाद वापसी में अपने प्रिय मित्र आदरणीय "श्री राम गोपाल जी", ब्रह्म पुरी के यहां करीब रात्रि 10:30 बजे पहुंचा और 5 मिनट रुकने के उपरांत, वापसी अपने घर रात्रि करीब 11 बजे पहुंचा। इसी दिन मेरा अपने दिल्ली समाज से व्यक्तिगत परिचय हुआ जो बहुत ही सुखद था । ये सम्पूर्ण यात्रा मैंने साइकिल से तय की, मेरी ये यात्रा करीब 125 किमी की रही होगी। और अपने समाज से लगाव व प्यार जो अभी तक अविरल बह रहा है।

ममता का सागर है माँ, माता-पिता के चरणों होता है स्वर्ग

मातृवंदना

पंकज शर्मा

रिल्स और आईफोन के युग में अब नई पीढी के बच्चों को मातृप्रेम के महत्व को समझाना बहुत ज़रूरी

जिस समाज में महिलाए सशक्त और शिक्षित होती है उस समाज में आनेवाली पीढी उन्नत हो जाती है

माँ का प्यार धरती पर अमृत है। इंसान को जन्म देने वाली मां का गौरव बहुत अनोखा होता है। हर भाषा में अनेक कवियों ने धरती पर अमृत के समान माँ की ममता की महिमा का बखान किया है। माता, माँ, ममी, अम्मी, आई, अम्मा ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। माँ वह इंसान होती है जो निस्वार्थ भाव से अपने बच्चों के लिए सब कुछ त्याग देती है। गुजरात में तो कई कवियों ने मातृ-प्रेम की महिमा का गान और गुणगान किया है। कवि बोटादकर ने अपनी कविता में कहा है, "जननी जोड सखी नहीं जडे रे लोल! आज मां की महत्ता के बारे में लिख रहा हूं. लेकिन अगर मां के बारे में लिखने बैठ जाऊं तो मेरी पूरी जिंदगी कट जाएगी। क्योंकि एक माँ जो कर सकती है वो कोई नहीं कर सकता और यदि कोई उसकी महिमा के बारे में लिखना चाहे तो दिन कम पड जायेंगे। वेदो में माँ के बारे में कहा गया है कि

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।।

अर्थात माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है। माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।

आज जीवन में माता के महत्व के बारे में लिखना हो तो सबसे पहले लेखन की शुरूआत वहीं से होनी चाहिए जहां मां अपने कोख में बच्चे को जन्म देती है। जब एक मां एक बच्चे को जन्म देती है तो वह खुद ही दूसरा जन्म ले लेती है। क्योंकि बच्चे को जन्म देने का दर्द मौत के करीब होता है। लेकिन माँ तब भी उस दर्दनाक स्थिति को एक उज्ज्वल मुस्कान के साथ जीवित रखती है। यह हमारे जीवन का एकमात्र क्षण है जब हम रोते हैं और हमारी माँ हमें देखकर मुस्कुराती है। अपनी मां के लिए हमारे अंदर असीम प्रेम है, क्योंकि हमने अपने अस्तित्व की शुरुआत उसी के एक अंश के रूप में की है। अगर आप इस बात की कद्र नहीं करते, अगर आपने पूरी तरह अपनी चेतना खो दी है तो ऐसा इसलिए है, क्योंकि आप अपने दिमाग में चल रहे मूर्खतापूर्ण विचारों में ज्यादा व्यस्त हैं। आपके दिमाग में जो चल रहा है, वह इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि आप अपने बारे में कुछ ज्यादा सोचते हैं। नई पीढ़ी के बच्चों को मां के आदर्श, मां का त्याग, बच्चों के लिए अपना पूरा जीवन न्यौछावर करने का साहस, अपनी खुशियों का त्याग कर अपने बच्चों की खुशियों को प्राथमिकता देने वाली ममता की छवि को कभी नहीं भूलना चाहिए। ऐसी वात्सल्य की मूरत समान मां को कभी भी सताना या कष्ट नहीं देना चाहिए। आज के बच्चों को यह शिक्षा देने की बहुत आवश्यकता है।

मां अतुलनीय है, उसकी दुनिया में किसी से तुलना नहीं की जा सकती है। माँ शब्द को किसी भी तरह से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। असहनीय शारीरिक पीडा के बाद एक बच्चे को जन्म देने वाली माँ को भगवान का दर्जा दिया जाता है क्योंकि माँ जननी होती है और भगवान ने माँ के द्वारा ही पूरी सृष्टि की रचना की है। माँ दुनिया में सबसे अधिक प्यार दुलार केवल अपने बच्चे से करती है लेकिन जब बच्चा गलत राह पर चलने लगता है तो माँ अपने कर्तव्यों को निभाना भी अच्छी तरह से जानती है। एक माँ कभी नहीं चाहती कि उसका बच्चा किसी भी गलत संगत में पडकर अपने भविष्य को खराब कर ले। माँ हमेशा अपने बच्चे की परवाह करती है। हमेशा साथ रहने वाले भगवान के रूप में इस संसार में सभी के जीवन में माँ सबसे अलग होती है जो अपने बच्चों के सभी दुःख ले लेती है और उन्हें प्यार तथा संरक्षण देती है। हमारे शास्त्रों में माँ को देवी के समान पूजनीय माना जाता है। माँ हर मुश्किल घड़ी में अपने बच्चों का साथ देती है और अपने बच्चे को हर दुःख से बचाती है। माँ असहनीय कष्टों को सहकर भी चुप रहती है लेकिन अगर बच्चे को जरा-सी चोट लग जाती है तो वह बहुत दुखी और परेशान हो जाती है। बच्चे का दुःख माँ से देखा नहीं जाता है।

समाज और परिवार में माँ का बहुत महत्व होता है। माँ के बिना जीवन की उम्मीद भी नहीं की जा सकती है। अगर माँ न होती तो हमारा अस्तित्व भी नहीं होता। खुशी छोटी हो या बड़ी माँ उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है क्योंकि माँ के लिए हमारी खुशी ज्यादा मायने रखती है। माँ बिना किसी लालच के अपने बच्चे को प्यार करती है और बदले में केवल बच्चे से प्यार ही चाहती है। हर किसी के जीवन में माँ एक अनमोल इंसान होती है जिसके बारे में शब्दों में कहा नहीं जा सकता। एक माँ बच्चे की छोटी-से-छोटी जरूरत का ध्यान रखती है। माँ बिना किसी लाभ के हमारी प्रत्येक जरूरत का ध्यान रखती है। माँ का पूरा दिन बच्चों की जरूरतें पूरा करने में बीत जाता है लेकिन वह बच्चों से कुछ भी वापस नहीं मांगती है। एक माँ वह इंसान होती है जो अपने बच्चों के बुरे दिनों और बिमारियों में उनके लिए रात-रात भर जागती है। माँ हमेशा अपने बच्चों को सही राह पर आगे बढने के लिए बच्चे का मार्गदर्शन करती है। माँ हमें जीवन में सही कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। माँ बच्चे की सबसे पहली अध्यापक होती है जो उसे बोलना, चलना सिखाती है। एक माँ ही बच्चे को अनुशासन का पालन करना, अच्छा व्यवहार करना और देश, समाज, परिवार के लिए हमारी जिम्मेदारी और भूमिका को समझाती है।

माँ अपने बच्चे की पसंद-नापसंद को सबसे बेहतर समझती है और बच्चे को सही गलत में अंतर करना सिखाती है। इस दुनिया में माँ की तुलना किसी और से नहीं की जा सकती है क्योंकि बच्चे को पालने के लिए माँ के जितना स्नेह, त्याग और अनुशासन कोई और नहीं कर सकता है। समाज और देश के प्रति हमारी जिम्मेदारियों के सही मायने भी हमारी माँ ही सिखाती है। माँ ही बच्चे को नई-नई बातें सिखाती है और सही सीख के साथ आगे बढने के लिए प्रेरित करती है जिससे हम पीछे न रह सकें। बच्चे बडे होने पर अपने स्तर पर माँ और उनके जीवन को अलग-अलग पहचान और महत्व देते हैं लेकिन माँ बिना किसी पहचान और लालच के अपने बच्चों के लिए कष्ट व प्रताड़ना को सहती हुई पालन पोषण करती है।

हम कहीं भी रहे माँ का आशीर्वाद हमारे साथ रहता है। माँ के आशीर्वाद के बिना रहना हमारे लिए कल्पना से परे है। माँ के प्रेम की तुलना किसी और चीज से करना सूरज के सामने दीया जलाने के समान है। सुबह के समय वह बहुत ही प्यार के साथ बच्चे को उठाती है और रात के समय वह बहुत प्यार के साथ कहानियाँ सुनाकर बच्चे को सुलाती है। माँ बच्चे को स्कूल जाने के लिए तैयार होने में बच्चे की मदद करती है और बच्चे के लिए सुबह का नाश्ता और दोपहर का खाना भी बना कर देती है। माँ दोपहर को बच्चे के स्कूल से आने का इंतजार करते हुए दरवाजे पर खडी रहती है। माँ बच्चे का होमवर्क करवाती है। परिवार के सदस्य अन्य कामों में व्यस्त रहते हैं लेकिन माँ सिर्फ बच्चे के लिए समर्पित रहती है।

हमारे लिए माँ सबसे अच्छा खाना बनाने वाली, सबसे अच्छी बातें करने वाले, सबसे अच्छा सोचने वाली और सभी दुखों के सामने पहाड की तरह खडी रहने वाली है लेकिन माँ जरूरत पडने पर अपने बच्चे के अच्छे भविष्य के लिए उसे डांट भी सकती है। माँ बच्चे को सही कामों के लिए सदैव समर्थन देती है। एक माँ ही संतान को उच्च विचारों का महत्व बताती है। एक माँ अपनी संतान को चरित्रवान, गुणवान बनाने में अपना पूरा योगदान देती है। किसी भी व्यक्ति का चरित्र उसकी माँ की बुद्धिमता पर निर्भर करता है। एक माँ अपने संतान के लिए सर्वाधिक प्रिय होती है। एक माँ अपनी संतान के लिए पूरे संसार से लड जाती है लेकिन माँ का संतान के प्रति अँधा प्रेम संतान के लिए अहितकर सिद्व होता है।

परिवार की तमाम समस्याओं आर्थिक तंगी स्वयं के स्वास्थ्य के गिरावट के उपरांत भी वह अपनी संतान, पति, सास ससुर आदि के दुःख दर्द को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं. एक परिवार में सभी सदस्य अपने अपने कार्य में मग्न रहते है कोई स्कूल जाता है तो अपने होम्वर्क में जुटा रहता है कोई ऑफिस के काम में पर माँ सभी के लिए खाना बनाना खिलाना घर का ख्याल रखना आदि में व्यस्त रहती हैं. यानि भले ही सभी अपनी अपनी सोचते हो मगर माँ सभी के लिए समर्पित रहती हैं.माँ के जीवन का अधिकतर और बहुमूल्य समय अपनी संतान की देखभाल में ही व्यतीत होता हैं. सभी लोग जब खर्राटे भरी नीद में सोते है तब भी माँ रात को कई बार जगकर अपनी सन्तान को देखती रहती हैं. पानी भरने का काम करती है. वह कम भोजन और कम नीद के उपरांत भी सबसे अधिक काम और सर्वाधिक चिंता करने वाली माँ ही हैं.खासकर ग्रामीण आंचल में आज भी माएं अपनी घर की जिम्मेदारियों को पूरा करने के बाद खेत आदि में जाकर पति के काम में हाथ बंटाती हैं. इस तरह इन जिम्मेदारियों के निर्वहन में उन्हें सवेरे सबसे पहले जगकर और रात में सबसे बाद में सोना पड़ता हैं.

एक माँ जो एक बच्चे के जीवन को आकार देने के लिए बहुत कष्ट उठाती है, उसे अपने बच्चे से कोई अपेक्षा नहीं होती है। उनकी एक ही इच्छा होती है 'मेरा बच्चा खुश रहे. लेकिन वही माँ जब बूढ़ी हो जाती है तब बेटे की तरफ से सम्मान के बदले अपमान और स्नेह के बदले तिरस्कार मिलता हो तो उस माँ के हृदय को कितना कष्ट होता होगा? हम सोच भी नही सकते. माँ का ऋण हम कभी चुका नही सकते है. आज की भाग दौड की जिंदगी में मनुष्य अपनी दूसरी परेशानियों या खुशियों को अधिक प्राथमिकता देते हैं और दूसरी बातों की वजह से अपनी जननी को नजर अंदाज कर देते हैं। हमें कभी-भी अपनी जननी को नहीं भूलना चाहिए क्योंकि उनके एहसान को हम कभी नहीं चुका सकते इसलिए आप अपनी खुशियों और दुखों में कहीं पर भी हों लेकिन अपनी माँ को न भूलें और न ही उसे कभी अकेला छोड़ें। खुशनसीब है वो जिनके पास माँ है वरना हम जैसे के नसीब में बस माँ की यादें ही है ।।

माँ के नाम एक कविता

मेरे सर्वस्व की पहचान, अपने आँचल की दे छाँव
ममता की वो लोरी गाती, मेरे सपनों को सहलाती
गाती रहती, मुस्कराती जो, वो है मेरी माँ।
प्यार समेटे सीने में जो, सागर सारा अश्कों में जो
हर आहट पर मुड़ आती जो, वो है मेरी माँ।
दुःख मेरे को समेट जाती, सुख की खुशबू बिखेर जाती
ममता की रस बरसाती जो, वो है मेरी माँ।
घुटनों से रेंगते-रेंगते, कब पैरों पर खडा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में, जाने कब बड़ा हुआ,
काला-टीका दूध मलाई, आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह, माँ प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊ बड़ा, "माँ!" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ..

जयपुर : "हर्याणा गौड़ ब्राह्मण समाज एक अध्ययन" का विमोचन

24 सितंबर 2023 को जयपुर में सामाजिक गोठ, प्रतिभा सम्मान व राजनीतिक सम्मेलन में केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरधीचन्द जी व अन्य सम्मानित समाज बंधुओं द्वारा सामाजिक पुस्तक "हर्याणा गौड़ ब्राह्मण समाज एक अध्ययन" का विमोचन किया गया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.सुधादेवी(कपूरीबेन) गिरिराजकिशोर पंडित (दावडा-वसो) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख - 28 जनवरी 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.रुकमणी मथुराप्रसाद शर्मा(वडोदरा-चांपानेर) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख-16 मई 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.पन्नालालजी पंडित(बायडवाले) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख-4 मई 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.रमेशचंद्र पूरणलाल शर्मा (आसोदर-आणंद) की आत्मा को शांति प्रदान करे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख-5 जून 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.ओमकार प्रसाद मोतीलाल शर्मा(मंजूसर-वडोदरा) की आत्मा को शांति प्रदान करे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख-3 जून 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.नारायण हरगोविन्ददास शर्मा(वडोदरा) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख - 6 जुलाई 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.अशोक चंद्रभान शर्मा की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख - 20 जून 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.अनिलकुमार रामचंद्र शर्मा (निवासी-वडोदरा) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख - 30 जनवरी 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.पन्नालाल ताराचंद्रजी पंडित(निवासी भिलोडा-जिला अरवल्ली)की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

(निधन तारीख - 17 जुलाई 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.लक्ष्मीचंद्र शर्मा(निवासी वडोदरा)की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! ॐ शान्ति

(निधन तारीख - 31 जुलाई 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.शुशिलाबेन धर्मचंद पंडित(निवासी मोहनपुर भिलोडा-जिला अरवल्ली) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! ॐ शान्ति

(निधन तारीख - 12 अगस्त 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.उर्मिलाबेन भगवानदास शर्मा (निवासी खेरालू जि.महेसाणा) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! ॐ शान्ति

(निधन तारीख - 11 September 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

परमपिता परमेश्वर स्व.छितरमल कालीराम शर्मा (निवासी-देवीआटस-मथुरा) की दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! ॐ शान्ति

(निधन तारीख - 11 September 2023)

हरियाणा गौड ब्राह्मण-गुजरात पत्रिका टीम

समाज की पहचान से नही होना चाहिए खिलवाड - गणेश दत्त शर्मा

हमारा समाज अपना वजूद रखता आया है। समय - समय पर अपनी सक्षमता का परचम भी लहराता रहा है । हमारा अतीत भी गौरवशाली रहा है। समयानुसार दुनियां के साथ कदमताल मिलाता रहा है । मुगलिया सल्तनत से स्वधर्म रक्षा हो या जीवन रक्षा की बात हो या मानव मात्र के कल्याण के लिये काम करने की जरूरत हो, स्वतंत्रता आंदोलन में भी हमारे समाज के बुजुर्गों का समरणीय योगदान रहा है । अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के किस्से हमारे आसपास सुनने को मिल जाते हैं , यह जरूर है उन्हें राजकीय दस्तावेजों में वो स्थान नहीं मिल पाया जो मिलना चाहिये था । कुछ किवदंतियां , जागा -पंडों की पोथियां , दूसरे समाजों द्वारा बताया जाने वाले कथानक इनके गवाह माने जा सकते हैं ।

समाज का वर्तमान हमारे सामने है , वर्तमान पीढी हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती दिखाई पड रही है। स्थानीय स्तर पर राजनितिक पकड भी समाज रखता है। लेकिन दुर्भाग्य कहें या राजनितिक समझ की कमी या शिथिलता मानी जाये या जो कारण रहे होंगे राज्य स्तर की राजनीती में कुछ खास नहीं कर पायें हैं, एक अदद टिकिट के लिये ही जद्दोजहद में उलझे रहते हैं । वहीं राष्ट्रीय स्तर की बातें तो शायद चिंतन का हिस्सा ही नहीं बनी हैं, अभी तक।

यदि समीक्षात्मक रूप से विचार किया जाये तो हमारा समाज देश की मुख्यधारा में सक्षमता के सभी गुण रखता है । शैक्षिक, आर्थिक,मनोरंजन, खेल, राजकीय सेवा व राजनीती आदि हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण सक्षमता के बावजूद समाज की पहचान को तथाकथित विद्वानों , समाज के नेताओं ने उलझम - पुलझम कर दिया है । यह हमारे लिये शर्मनांक होने के साथ दुखद स्थिति भी है । दुनियाभर का ज्ञान समेटे , सक्षमता का साफा बांधे हम लोग आज भी हरित, हारीत, भारद्वाज, भरद्वाज, हर्याणा, हरियाणा, शर्याणा, भर्याणा , गौड, गौड़, गोड, गोंड,गॉड, सनाड्य , नाथ आदि शब्दिक पहचान ही तय नहीं कर पाये हैं । कुछ लोग कहते हैं , यह कोई मुद्दा ही नहीं है , इस विषय पर चर्चा करना ही कोई नहीं चाहता ।

ऐसे हालात में जिनके जो समझ में पैठा हुआ है , बस वो वही मानकर बैठा है । मजे की बात यह है यह विवाद बाकायदा लिखित दस्तावेजी बनाया गया है । जो लोग यह कहते हैं यह कोई विवाद नहीं है , वो अपने विचारों के पक्ष में वो बात रखते हैं जो उनके संज्ञान में है, उसी समय जिनके पास अन्य जानकारी या मान्यता है , वो अपने पक्ष को ही सही मानते हैं । यह विवाद किस हद तक हमारे बीच में है , इसका जीवंत उदाहरण है, 'हारित ऋषि जयंति ' जिसे मनाने का ट्रेंड देखा जा सकता है । कुछ वर्षों पहले पूरी धूमधाम से यह जयंति मनाई जाती रही , फिर अचानक वो आयोजन बंद हो गया , बीच बीच में कुछ लोग निजी स्तर पर संक्षेप में जरूर हारित ऋषि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते रहे हैं , अब पुनः आयोजन का आह्वान किया जा रहा है ।

यह सब विचारणीय है , ऐसा क्यों होता रहा है ? कभी क्यों नहीं संबंधित तात्कालिक वर्तमान नेतृत्व ने इस विषय पर गंभीरता पूर्वक सामूहिक निर्णय का मार्ग अपनाया गया / जा रहा है । जब जिसके जो मन आता है , जब परिस्थिती उनके विचार के पक्ष में दिखाई देने लगे , अपना विचार बिना सामूहिक विमर्श के पूरे समाज पर थोपने का प्रयास शुरू कर दिया जाता है । कौन लोग हैं जो समाज की अस्मिता को गंभीरता से नहीं लेकर अपनी मनोस्थिति को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं।

यहां सिर्फ आग्रह इतना सा ही है की चाहे किसी भी एक ऋषि को मानो , चाहे एक से ज्यादा को मानो, प्रवर्तक मानों, जो खुद को किस ऋषि का वंशज मानना है, किसे कुल ऋषि मानना है , गौत्र प्रवर्तक मानना है या नहीं मानना है आदि पर सामूहिक रूप से चिंतन-मनन होना चाहिये। सामूहिक विमर्श के निर्णयानुसार इस विषय पर विधिवत , प्रक्रियानुसार शोध होना चाहिए , ताकि तार्किक विमर्श , उपलब्ध तथ्यों , किवदंतियों, कथाओं आदि के आधार पर सामूहिक निर्णय लिया जाये । जो निर्णय लिया जाए वो सामूहिक निर्णय होगा , जिसका सम्मान करना हर समाज जन स्वयं जिम्मेदारी लेंगे ।

इस तरह के विचार व निर्णय मनुष्य की आंतरिक स्व से संबंधित होते हैं , इनके साथ खिलवाड करना ना तो न्यायोचित होता हैं , ना ही समाज हित में होता हैं । जब तक सामूहिक विमर्श आधारित तथ्याधारित शोध, चिंतन, मनन पर आधारित सामूहिक प्रक्रिया से निर्णय ना हो हर व्यक्ति /व्यक्ति समूह अपनी जानकारी, समझ , मान्यतानुसार मानने , आयोजन करने , शामिल होने, नहीं होने का व्यक्तिगत /समुह निर्णय लेते रहेंगे । इसलिये समाज हित में उचित निष्कर्ष जरूरी है ।

समाज चिंतन
गणेश दत्त शर्मा

जब परिस्थिति व्यक्ति के अनुकूल होती है तो वो व्यक्ति बिना सामूहिक विचार-विमर्श के अपने पूर्वकल्पित विचारों को समाज पर थोप देता है, जो अनुचित है।

हारित ऋषि के बारे में आज भी समाजबंधुओ को सही और उचित जानकारी नही है, क्या यह समाज के लिए दुःख की बात नही है?

(उक्त लेख किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के विचारों, मान्यताओं का ना तो विरोध है और ना ही समर्थन है। सिर्फ समाज हित में चिंतन ,मनन व उचित निष्कर्ष निकालने का आग्रह मात्र है।)

अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा द्वारा आयोजित

सामूहिक गोठ प्रतिभा सम्मान समारोह एवं राजनैतिक सम्मेलन की भव्य सफलता...

अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा जयपुर के तत्वावधान में आयोजित विशाल सामूहिक गोठ, प्रतिभा सम्मान समारोह एवं राजनैतिक सम्मेलन का शुभारंभ श्री श्री 1008 श्री सिद्धपीठ बैनाडा धाम श्री रामदयाल दास जी महाराज के सानिध्य में वैदिक मंत्रोंचार के साथ दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में पधारे मुख्य अथिति माननीय केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह जी शेखावत, उपनेता प्रतिपक्ष सतीश जी पूनिया, राज्यसभा सांसद घनश्याम जी तिवारी, विप्र कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष महेश जी शर्मा ने प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रतिभाओं को सम्मानित किया। इस दौरान हरियाणा ब्राह्मण समाज के उत्थान में किए गए योगदान को दोहराते हुए आगामी चुनावों में हरियाणा ब्राह्मण समाज का पूरा ध्यान रखते हुए अपना पूर्ण सहयोग देने का वादा किया समाज के इतिहास व वर्तमान स्थिति से अवगत कराया और आगामी विधानसभा चुनावों में प्रमुख पार्टियों की ओर से समाज को कम से कम पाँच-पाँच टिकट देने की समाज मांग की।

इस दौरान भारत सरकार में केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावतने भी शिरकत की , उन्होने इस समारोह में कहा कि जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा के सम्मेलन में प्रतिभाओं को सम्मानित करने का अवसर मिला। सामाजिक - राजनीतिक चेतना से परिपूर्ण बहनों और भाइयों से संवाद स्थापित कर प्रसन्नता हुई। गरिमामय एवं उद्देश्यपूर्ण आयोजन की जितनी प्रशंसा करूं कम होगा। तो वही आमेर के विधायक डॉ.सतीष पुनिया, उपनेता प्रतिपक्ष , राजस्थान विधानसभा भी ब्राह्मण बंधुओ का उत्साहवर्धन करने के लिए विशेष उपस्थित रहे.

कमलेश शर्मा

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरधीचंद शर्माने बताया कि प्रतिभा सम्मान समारोह के दौरान समाज की छात्र-छात्राओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का ह्रदय से आभार प्रकट करते हुए कहा कि समाजबंधुओ के साथ सभी पदाधिकारीगण, वरिष्ठ एवं युवा समाज बंधुओं द्वारा विशाल सामूहिक गोठ, प्रतिभा सम्मान समारोह एवं राजनैतिक सम्मेलन में पुरजोर मेहनत कर उस को सफल बनाया है इस के लिए समाजबंधुओ का ह्रदय से आभार प्रकट करता हूं। समाजबंधुओ की महेनत की वजह से ही कार्यक्रम ऐतिहासिक व अनुशासनात्मक रूप से संपन्न हुआ।

वडोदरा : "परीक्षा पे चर्चा" शिक्षक काजल शर्मा के विचारो की हुई सराहना

वडोदरा की शिक्षिका काजल शर्मा को "परीक्षा पे चर्चा" के तहत प्रधानमंत्री कार्यालय से प्रशंसा पत्र मिला। "परीक्षा पे चर्चा" कार्यक्रम के तहत देशभर से शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए.. जिसमें काजल शर्मा द्वारा व्यक्त किए गए सुझावों और विचारों को नोट किया गया.. जो सराहनीय है... हालाकि और भी कई शिक्षको को इस तरह से प्रशंसा पत्र दिए गए है। पीएम कार्यालय से पत्र प्राप्त होना अपने आप में एक गर्व की बात होती है।

लंदन : गणेश महोत्सव धूमधाम से मनाया गया, युके स्थित हितेश शर्मा ने बताया अनुभव

लंदन में भारतीय समुदाय द्वारा गणेश महोत्सव धामधूम से मनाया गया। हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज के युवा बंधु हितेश शर्माने बताया कि लंदन के उप्टन पार्क, ग्रीन स्ट्रीट में गुजराती एवं भारतीय समुदायोने मिलकर गणेश महोत्सव मनाया । जिस में पूरे 10 दिन तक हम सभी प्रथम पूजनीय गणेशजी की सेवा में सुबह शाम लगे रहे। गणेश जी के विसर्जन के लिए आयोजकों की ओर से विशेष व्यवस्था की गई थी। जिसमें मिट्टी के गणेश जी को एक पात्र में जल भरकर छोड़ा गया.. इन 10 दिनों के दौरान हर शाम भोजन प्रसादी का आयोजन किया गया. और लगभग 300 से 500 लोग लाभ लेने आते हैं.. इतना ही नहीं, हर शाम गणेश जी की आरती के बाद गरबा कार्यक्रम भी होता था. इसलिए सभी लोग बहुत उत्साह से भाग लेते थे. जिस तरह भारत में गणेश उत्सव मनाया जाता है उसी तरह लंदन में भी गणेश महोत्सव मनाया जाता है। यहां के गणेश पंडाल में जब आप आएंगे तो आपको कभी महसूस नहीं होगा कि आप भारत में नहीं हैं.. भले ही आप लंदन में हैं लेकिन आपको भारत जैसा ही माहौल देखने को मिलेगा.. अभी यहां नवरात्रि की तैयारीयां भी चल रही है.. उसके बाद दिवाली का सेलिब्रेशन भी होने वाला है..

आयोजको से कैसे हुआ परिचय? : हितेश शर्मा का कहना है कि लंदन में भजन कार्यक्रम के लिए आयोजकों को एक गायक और एक तबला वादक की जरूरत थी। मेरा एक दोस्त आयोजकों के ग्रुप में था। उसको पता था कि मुझे तबला बजाने और गाने का शौक है. तो उन लोगों ने संपर्क किया. फिर उन्हें मेरा काम पसंद आया तो मुझे उनके ग्रुप में शामिल होने का मौका मिल गया।

भरतपुर : प्यासे को पानी पिलाकर शीतल जल सेवा प्रदान करते है शर्मा दंपति

सेवा के अनेक रूप हैं। यदि कोई सेवा करना चाहता है तो वह कई तरीकों से दूसरों की मदद कर सकता है। राजस्थान के भरतपुर में, मोहनलाल शर्मा और उनकी पत्नी बेला शर्मा हर दिन आरबीएम अस्पताल में ठंडे पानी की सेवा प्रदान करते हैं। वे दवा काउंटर और केस विंडो पर लाइन में खड़े लोगों को पानी पिलाते हैं। मोहनलाल शर्मा ने अपनी मां चंद्रावती की याद में मरीजों के बैठने के लिए 7 बेंच भी लगाई हैं। मोहनलाल शर्मा ने बताया कि डीडीसी के यहां छह काउंटर हैं. जहां लंबी-लंबी कतारें लगी हुई होती हैं. इसलिए यहां भीडवाले समय के दौरान सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक शीतल जल सेवा प्रदान करते हैं। गौरतलब है कि मोहनलाल शर्मा की यह जल सेवा जितनी छोटी लगती है उतनी ही बड़ी और व्यापक भी लगती है। उनके मन में जो विचार उत्पन्न हुआ वह सबसे बड़ी सेवा की शुरूआत है। क्योंकि आज के समाज में सम्मानित और बुद्धिमान वर्ग भी खुद के स्वार्थ के अलावा सेवा करने में रूचि नही रखते है । ऐसे में जल की यह निःस्वार्थ सेवा वाकई में सराहनीय एवं वंदनीय है।

भादरवी पूनम मेले में माताजी के भक्त अशोक शर्मा पैदल चलकर पहुंचे शक्तिपीठ अंबाजी

अंबाजी का अर्थ है एक चमत्कारी स्थान जहां माँ अम्बाजी साक्षात विद्यमान है। हर साल भाद्रवी पूनम के दिन लाखो श्रद्धालु माँ अम्बा के धाम में दर्शन के लिए आते हैं। इनमें से कई लोग पैदल आते हैं. लोग 500-500 किलोमीटर पैदल चलकर माँ अंबा के दर्शन करते हैं. हरियाणा गौड ब्राह्मण समाज के भी कई समाजबंधुओ अंबाजी दर्शन के लिए जाते है। बात है आणंद के अशोक पिताम्बरदास शर्मा की। वह एक ऐसे पैदल श्रद्धालुओ के संघ के साथ जुडे है जो पिछले 23 सालों से लगातार अंबा के दर्शन करने जा रहा है। अशोक शर्माने पत्रिका टीम को बताया कि यह संघ आणंद जिले के आंकलाव तहसील के खडोल गांव से निकला था। इस गांव का संघ पिछले कुछ वर्षों से अंबाजी के धाम तक पैदल यात्रा कर रहा है, जिसमें 100 से अधिक भाई-बहन शामिल होते हैं। अशोक शर्मा ने कहा कि वह पिछले तीन साल से जय अंबे पगपाला संघ से जुड़े हैं. इससे पहले वह पिछले नौ साल से भादरवी पूनम के दिन अंबाजी दर्शन के लिए जाते थे.लेकिन पिछले तीन वर्षों से वह तीर्थयात्रियों के संघ के साथ चल रहे हैं। यह संघ खडोल (एच) से निकलता है और आणंद, नडियाद, अहमदाबाद, गांधीनगर, प्रांतीज, ईडर, खेड़ब्रह्मा से होकर गुजरता है 9 दिनों में अंबाजी के धाम पहुंचता है। में स्वयं हर वर्ष इस संघ के साथ पैदल अंबाजी के लिए जाता हूं। माता अंबाजी के दर्शन पाकर धन्यता महेसूस करता हू। गौरतलब है कि इस भादरवी पूनम(29 सितम्बर 2023) के दिन तक यात्राधाम अंबाजी में 30 लाख से ज्यादा श्रद्धालु दर्शन करते है। इस बार 23 सितम्बर से 29 सितम्बर का महामेले का आयोजन भी हुआ था। जिसकी वजह से भी अंबाजी जानेवाले यात्रीओ की सुविधा पहले से काफी बढाई गई थी।

जयपुर : ऋषि पंचमी के अवसर पर मनाई गई हारीत ऋषि जयंति

हारित ऋषि जयंति के अवसर पर भव्य कलशयात्रा एवं शोभायात्रा निकालकर सफल आयोजन करनेवाले समाज के आयोजक के लिए राष्ट्रीय महासभाने पुरस्कार राशि देने की घोषणा की..बिरधीचंदजीने बताया की ऋषि पंचमी के दिन अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा कार्यालय श्री चर्तुभुज जी का मन्दिर, धाभाई जी का खुर्रा, रामगंज बाजार, जयपुर पर हरियाणा गौड़ ब्राह्मण वंश प्रवर्तक ऋषि श्रेष्ठ 1008 श्री हारीत ऋषि की जयन्ती पर पूजा अर्चना कर पूर्ण हर्षोल्लास से मनाई गई । श्री हारीत ऋषि शोभायात्रा एवं कलश श्री ब्रजनिधि जी चांदनी चौक सिटी पैलेंस के पास जनाना ड्योढ़ी से प्रारम्भ होकर चर्तुभुज जी का मन्दिर, धाभाई जी का खुर्रा पहुँचकर समाज बन्धुओं ने शोभा यात्रा व कलश यात्रा में सपरिवार सम्मिलित होकर कार्यक्रम की बढ़ाई। इस दौरान महन्त श्री रामदयालदास जी महाराज श्री सिद्धपीठ श्री कल्याणजी (बैनाड़ा) बस्सी, महासभा के पदाधिकारी गण, विघालय समिति के पदाधिकारी गण एवं समाज बंधु, महिला शक्ति मौजूद रही।

लंदन में हितेश शर्मा को कंपनी ने वर्ष 2023 के श्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में सम्मानित किया

लंदन की एक आईटी कंपनी में आईटी मैनेजर के पद पर कार्यरत मूल सारसा(आणंद) निवासी हितेश शर्मा को हाल ही में कंपनी ने "एम्प्लोयी ओफ द यर" कर्मचारी के रूप में सम्मानित किया गया है। कंपनी की ओर से यह सम्मान उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने साल भर में सबसे अच्छा काम

किया हो और जिनसे कंपनी को फायदा हुआ हो. हितेश शर्मा ने बताया कि इस सम्मान पत्र के साथ उन्हें चांदी की लकी भी दि गई. हमारी कंपनी पिछले 10 वर्षों से कर्मचारियों को प्रेरित कर रही है। हालाँकि मुझे इस बारे में पता नहीं था.. लेकिन मुझे मेरे बॉस का ईमेल आया। फिर कंपनी में एक मीटिंग हुई, जिसमें मुझे सबसे अच्छे कर्मचारी के तौर पर सबसे ज्यादा वोट मिले. इतना ही नहीं, इस सन्मान के साथ ही मेरा ट्रान्स्फर कंपनी की मुख्य शाखा में हो गया है. जिसमें विशेष सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। गौरतलब है कि हितेश शर्मा लंदन स्थित 78-80 क्रैनब्रुक रोड, क्रैनब्रुक, इलफ़र्ड IG1 4NH में PRC Direct कंपनी में सिनियर सिस्टम एनालीस्ट(आईटी मैनेजर) के रूप में कार्यरत है। वह पौने दो साल से लंदन में पढ़ाई कर रहे हैं। और साथ ही जोब भी कर रहे है।

चौमु : राजकुमार रामस्वरूप शर्मा का स्वागत हुआ

बांसा (फतेहपुरा), चौमु : अखिल हरियाणा गॉड ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीरदीचंद जी शर्मा राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष राम नारायण जी कांजला की कार्यकारिणी में राजकुमार शर्मा सन ऑफ रामस्वरूप जी पंचोली रेवाड़िया परिवार फतेहपुरा को अखिल राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत होने पर गांव वालों ने इनका जोरदार माल्यार्पण साफा पहनाकर जोरदार स्वागत किया। स्वागत में शामिल हुए डूंगरम पंचोली मांगीलाल जी मास्टर घील पुलिस अधीक्षक 3 स्टार उकार मल पंचोली कालूराम जी मास्टर पंचोली, अशोक टूटाका , बद्रीनारायण श्याम सुंदर बोहरा , अर्जुन बलेसरा, लोकेश बोहरा, राकेश धंनवलिया, ज्ञान प्रकाश बलेसरा, अशोक मास्टर जी बलेसरा, रामअवतार रेवाड़िया, सत्यनारायण रेवाड़िया, बाबूलाल

टूटाका, मोनी जी बलेसरा, रविकांत बलेसरा ,मोहरी लाल जी ग्राम सेवक श्याम जी बलेसरा गांव के और भी बुजुर्ग जनों से आशीर्वाद मिला । गांव के नवयुवक भी शामिल हुए । महिलाओ में जिला पार्षद रामुडी देवी पार्षद बबल देवी वार्ड पंच बीना देवी वार्ड पंच प्रेम देवी मनभरी देवी लाली देवी राजू देवी गुड्डी देवी कमला देवी छोटा देवी प्रेम देवी बदाम देवी नाना देवी और भी खूब सारी महिलाओं ने सम्मान समारोह में भाग लिया।

भावभरी श्रद्धांजलि

स्व.श्रीमती कलावतीबेन भगवतीप्रसाद शर्मा

(स्वर्गवास ता. 24-11-2017)

SHREERAM IRON HOUSE
(Iron & Steel Ware House & Loading Unloading)
Kanbha, Ahmedabad
Ramavtar M. Sharma 9898062241
Mukesh M. Sharma 99049 22241

SHREE BAJRANG TRANSPORT
(Transport & Carting Contractor & Crain Loading & Unloading)
Vijay S. Sharma 9664829670
Giriraj R. Sharma 9825019175

Sitaram Sharma 9974981403
SHREE BALAJI TRANSPORT
(Transport & Carting Contractor & Crain Loading & Unloading)

Naresh R. Sharma 9558496512
Jayprakash S. Sharma 7600987776
SHARMA TYRES
AUTHORISED DEALERS : APOLLO TYRES LTD.
Odhav, Ahmedabad

STC
Rakesh R. Sharma 9825008751
Ashish S. Sharma 9979998685
SHARMA TYRES COMPANY
AUTHORISED DEALERS : MRF TYRES
Nana Chiloda Circle, Gandhinagar